ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

साखी(कबीर)

कक्षा-दसवी

विषय-हिन्दी

पाठ -३

पाठ का नाम –साखी (कबीर)

PPT-2

Website: www.odmegroup.org
Email: info@odmps.org
Toll Free: 1800 120 2316
Sishu Vihar, Infocity Road, Patia, Bhubaneswar- 751024

साखी की पाठ व्याख्या

- ऐसी बाँणी बोलिये ,मन का आपा खोइ।
- अपना तन सीतल करै ,औरन कौ सुख होइ।।
- बाँणी - बोली
  आपा - अहम् (अहंकार)
  खोइ - त्याग करना
  सीतल - शीतल (ठंडा ,अच्छा)
  औरन - दूसरों को
  होइ –होना
- प्रसंग -: प्रस्तुत साखी हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श ' से ली गई है। इस साखी के कवी 'कबीरदास 'जी है। इसमें कबीर ने मीठी बोली बोलने और दूसरों कौ दुःख न देने की बात कही हैं
- व्याख्या -: इसमें कबीरदास जी कहते है कि हमें अपने मन का अहंकार त्याग कर ऐसी भाषा का प्रयोग करना चाहिए जिसमे हमारा अपना तन मन भी सवस्थ रहे और दूसरों को भी कोई कष्ट न हो अर्थात दूसरों को भी सुख प्राप्त हो।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

- कस्तूरी कुंडली बसै ,मृग ढूँढै बन माँहि।
  ऐसैं घटि- घटि राँम हैं , दुनियां देखै नाँहिं।।
- कुंडली - नाभि
  मृग - हिरण
  घटि घटि - कण कण
- प्रसंग -: प्रस्तुत साखी हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श ' से ली गई है। इसके कवी कबीरदास जी है इसमें कबीर कहते है कि संसार के लोग कस्तूरी हिरण की तरह हो गए हैं जिस तरह हिरण कस्तूरी प्राप्ति के लिए इधर उधर भटकता रहता है उसी तरह लोग भी ईश्वर प्राप्ति के लिए भटक रहे है।
- व्याख्या -: कबीरदास जी कहते है कि जिस प्रकार एक हिरण कस्तूरी की खुशबु को जंगल में ढूंढ़ता फिरता है जबकि वह सुगंध उसी की नाभि में विद्यमान होती है परन्तु वह इस बात से बेखबर होता है, उसी प्रकार संसार के कण कण में ईश्वर विद्यमान है और मनुष्य इस बात से बेखबर ईश्वर को देवालयों और तीर्थों में ढूंढ़ता है। कबीर जी कहते है कि अगर ईश्वर को ढूंढ़ना ही है तो अपने मन में ढूंढो।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

- जब मैं था तब हरि नहीं ,अब हरि हैं मैं नांहि।
  सब अँधियारा मिटी गया , जब दीपक देख्या माँहि।।
- मैं - अहम् (अहंकार)
  हरि - परमेश्वर
  अँधियारा – अंधकार
- प्रसंग -: प्रस्तुत साखी हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक 'स्पर्श ' से ली गई है। इस साखी के कवि कबीरदास जी हैं। इसमें कबीर जी मन में अहम् या अहंकार के मिट जाने के बाद मन में परमेश्वर के वास की बात कहते है।
- व्याख्या -: कबीर जी कहते हैं कि जब इस हृदय में 'मैं ' अर्थात मेरा अहंकार था तब इसमें परमेश्वर का वास नहीं था परन्तु अब हृदय में अहंकार नहीं है तो इसमें प्रभु का वास है। जब परमेश्वर नमक दीपक के दर्शन हुए तो अज्ञान रूपी अहंकार का विनाश हो गया।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

गृह कार्य

- कबीर किसको त्याग करने केलिए कहते हैं ?
- आपा से आप क्या समझते हैं ?
- कस्तूरी कहाँ होता है ?
- हिरण के नाभी में क्या होता है ?
- हिरण क्यों भटकता रहता है ?
- ईश्वर को कहाँ खोजना चाहिए ?

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

THANKING YOU

ODM EDUCATIONAL GROUP

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow